वैदिक धर्म-संस्कारों एवं संस्कृतिका समग्र जन-जीवनपर प्रत्यक्ष प्रभाव

(जगदमुख गामानुजाचार्य स्वामी श्रीयामनारायणाचार्यजी महाराज)

वेदमें एक लाख मन्त्र हैं। असी हजार मन्त्र केवल कर्मकांडका निरूपण करते हैं, जबकि सोलह हजार मन्त्र ज्ञानका निरूपण करते हैं। मात्र चार हजार मन्त्र उपासना-काण्डके हैं।

मूल्रूपसे वेदमें दो भाग हैं—पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा। पूर्वमीमांसा अर्थात् असी हजार मन्त्र कर्मकांडका निरूपण करते हैं। कर्मकांड-निरूपणके आदिमें लिखा हुआ है ‘अध्यात्म धर्मजिज्ञासा’ और यहींसे मानव-जीवनका संस्कार आरम्भ होता है। गर्भधारणसे लेकर मृत्युपर्यंत सोलह प्रकाशके संस्कारोंका निरूपण वेद करता है।

वास्तवमें वेदमें वर्णित संस्कार-विधिके अनुसार यदि माता-पिता अपने बच्चोंको सुसंस्कृत करें तो वह बालक सच्चा मानव बन सकता है। भगवानुन्मे मनुष्य-शरीर इसलिये प्रदान किया है कि तुम वेदनुकूल आचरण करो तथ्य तुम मानव बन सकोगे। वेद-विरुद्ध आचरण होनेपर मानवका मानव-धर्म निभाना असम्भव है, क्योंकि शास्तरचनन
वेददीरारण: साध्वात

है—'आचाररूपी न पुनःरुत वेदः।' तात्त्वेत् यदि च आचाररूपी व्यक्ति न पञ्चत्रत होते हैं और अ न पञ्चत्रत आचारण करते हैं। तथा 'यदवसु भजो लालुः संसारो नान्यायं भवेत्'। बाल्यसंस्कारमें जो संस्कार माता पिता होता है वह अमित होता है। अर्थात् बालकों के अच्छे संस्कार हिन्दू-धर्म से गुरुकुल-अनुश्रमें भी बंद हो रहै हैं; कारण उनमें भी विलासी लोगोंके आवासगर्दमनसे आचारके वातावरणमें अत्यंत पढ़ता जा रहा है। धर्मके उपदेश करनेलाय गुरुज्ञोंमें भी भौतिकताकी अधी चलनी शुभ हो गयी है। इसलिए पहलेके अपेक्षा यदापि आज लाखों शिशु देखनेलाय कथा सुना रहे हैं, योगीकी शिशु देख रहे हैं, वेद-वेदांतला अध्याय कर रहे हैं, किर भी आजकलका बालक संस्कारहोना जाते रहे हैं।

पहले एक समय वह था जब कि लोग सप्तवेद करनेलाय कोट्नोंकी बिनाविको डिक्कसे इबाज करकर भगले थे, परंतु आज चार-चार दोनों वेद करके जन-जनके मन-वाणी तथा इतिहासपर अपना प्रभाव स्थापित करता चला जा रहा है। इसमें दोनों निन्दा नहीं है, कारण दोनों से तो संसारके सभी बालकोंकी जानकारी होती है, परंतु 'अति स्वरूप भर्जितेत'। समझदार व्यक्ति दोनों से समाचार मुन लेता है तथा धार्मिक सीरियल भी देख लेता है, परंतु छोटे बच्चोंके बुद्धि अपरिपक्व होती है, वे अच्छे बच्चोंको कम ग्रहण कर पाते हैं और बुयू बच्चोंके आधार जमा लेते हैं।

जहाँ दोनों के द्वारा प्रसारित श्रीराम-कृष्ण आदि सीरियलले कुछ लोगोंके अच्छे बालकोंकी जानकारी मिलती है, वहाँ साध प्रशिक्षण बच्चोंका संस्कार असतीन चिनाइटी देखनेलाय बिड़ा हो गया है। इसका मूल कारण है माता-पिताकी बच्चोंके प्रति लापरवाही तथा अधिक लाइट-प्यार करना। जिन माता-पिताको त्यस्य संस्कार नहीं प्राप्त हुआ है, वे अपने बच्चोंको कहाँतक अच्छे संस्कार दे सकते हैं। ऐसे माता-पिता तो जन्म दे सकते हैं, परंतु अच्छे संस्कार के सैकड़ों-हजारों नरीको एक सुसंस्कृत माता-पिता ही दे पाते हैं। वेद, शास्त्र, रामायण तथा गीतापर हजारों हिन्दू और अन्य ग्रन्थोंकी धर्मरूपी हो चुकी हैं तथा होती भी जा रही हैं, परंतु अच्छे संस्कार बहुत कम लोगोंका प्राप्त हो रहे हैं। इसका मूल कारण है—उपदेश देनेलाय संस्थानीयों तथा माता-पिताका स्वयं अच्छे आचरणके बिना उपदेश देना। यदि ऐसा ही चलता रहा तो धर्म-धीर आजकल बालक बिगड़नेलाय अलावा सुन्दर नहीं सकता। जहाँ पूर्वकालले बिदेशी लोग जिस जान तथा भक्तिकी भूमिका भारतीय शिशु प्राप्त करके आगे बढ़े थे, वहीं आज भारतीय मानव-समाजका पतन हो रहा है, भारतका अनुकुलन करनेलाय बिदेशी भारतीय आचरणको प्रणाली करके हमसे आगे बढ़ते जा रहे हैं।

हमें स्वयं अपने शास्त्र-वेद-पुराणमें सिद्धान्त नहीं है; कारण हम सभीका संस्कार नष्ट होता जा रहा है। आज 'गीताप्रेस'-जैसे संस्थानिय जिस प्रकार अच्छे-अच्छी पुस्तकोंका प्रकाशन, रामायण-माता की परिशिष्टिय अच्छे-अच्छी कथाकथन-पुस्तकोंका प्रकाशन तथा रामनाम-जन-संकीर्तन आदि लोगोंका मन परिवर्तित हुआ है, यदि इसमें प्रकार स्वयंसेवी संस्थाओ एवं संत महापुरुषोंके आदि इसे आचरण करनेलाय बिद्वान एवं संतोंके द्वारा संस्कार देनेलाय साध-साध वेदान्तकुलते आचरण करके जारी तो मानवका विकास होना संभव है। धन-दीलत-कुदुब और परिवार बढ़नेलाय मानवकी उजागर नहीं होगी। राजनीतिक पाप दो सीखनेलाय लंका थी, परंतु संस्कारका होनेलाय लंका एवं उसके सारे कुदुब-परिवारका नास गया। उसी परिवारों विलीनकी अच्छे संस्कार संत-महात्माओंके द्वारा मिला, जिसके कारण स्वयं प्रमाणका श्रीराम उसके पास मिलने आये और जब प्रसारण मिल गये तो सारे संसारका वैभव भी मिल गया।

‘शं मे अत्सवधम्य मे अस्त’।
‘मुखे कल्याणकी प्राप्त हो और मुखे कभी किसी प्रकारका भय न हो।’ (अर्थवेद १९।९।१३)